www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दृश्य सत्संग की प्राणवान तैयारी

-ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरय सत्संग की प्राणवान तैयारी

प्राचीन काल में साहित्य सृजन दावात कलम पर निर्भर करता था। विद्वान लिखते थे और प्रतिलिपियाँ करने पर लेखकों का एक बड़ा समुदाय लगा रहता था। उन्हें साधन सम्पन्न खरीदते थे और विद्या प्रेमी उन्हें पुस्तकालयों से मांग कर पढ़ते थे। अब विज्ञान ने प्रेस के आविष्कार से उस कार्य में भारी सुविधा उत्पन्न कर दी है। कुछ ही समय में हजारों लाखों प्रतियाँ छप जाती हैं और उनकी लागत भी पूर्व काल की तुलना में नगण्य जितनी आती है। ज्ञान प्रसार के इस माध्यम ने अपने समय में भारी सुविधा उत्पन्न की है।

लेखनी के उपरान्त ज्ञान प्रसार का दूसरा माध्यम है—वाणी। प्रवचन कर्त्ता—गायक—कहीं कोई विरले ही होते थे और वे प्रेमियों द्वारा व्यवस्था किये जाने पर कथा-कीर्तन करने के लिए पहुँचते थे। ऐसा भी होता था कि सन्तों की भजन मंडलियाँ तीर्थ यात्रा स्तर की योजना बना कर प्रचार भ्रमण पर निकलती थीं और जहाँ सम्भव होता, वहाँ पहुंचकर अपना अभिमत प्रकट करती और जन समुदाय को ज्ञान दान से लाभान्वित करती थीं। प्राचीन काल से सत्संग की यही पद्धति कार्यान्वित होती रही है।

इसके उपरान्त विज्ञान ने लाउड स्पीकरों का आविष्कार किया और सभा-सम्मेलनों का नया तरीका निकाला। इससे पूर्व वाणी के बल पर प्रायः एक सौ व्यक्तियों तक का ही उद्बोधन बन पड़ता था। लाउड स्पीकर से एक समय में हजारों, लाखों की संख्या में उपस्थित जनता को प्रवचन कर्त्ताओं का अभिमत सुनने का सुयोग मिलने लगा। इस प्रकार प्रचार प्रक्रिया और तीव्र हो गयी। प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत पिछले दिनों गायत्री यज्ञों और साथ में युग निर्माण सम्मेलनों के आयोजन बड़ी संख्या में सफलतापूर्वक सम्पन्न होते रहे हैं। उनमें सम्मिलित होने वाले देव दक्षिणा के रूप में सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के संकल्प लेते रहे हैं। गायत्री की व्याख्या सद्ज्ञान के रूप में और यज्ञ की विवेचना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्कर्म के रूप में होती रही है। सभा-सम्मेलनों और धर्मानुष्ठान आयोजनों के माध्यम से युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि बनाने में इससे बहुत सहायता मिलती रही है।

इस कार्य पद्धति में प्रज्ञा आयोजनों की एक नई शृंखला जुड़ी है। प्रज्ञा पीठों और स्वाध्याय मण्डल प्रज्ञा संस्थानों के वार्षिकोत्सव नियमित रूप से होते हैं। इनमें संगीत गायक, प्रवचन कर्त्ता, फोल्डिंग स्टेज, फोल्डिंग यज्ञ शाला, लाउड स्पीकर आदि उपकरणों समेत जीप गाड़ियाँ भेजने की व्यवस्था बन पड़ी। इस आधार पर विनिर्मित संगठनों के वार्षिकोत्सव, गायत्री यज्ञ एवं युग निर्माण सम्मेलन समेत और भी सरलतापूर्वक, बड़ी संख्या में होने लगे। वाणी के माध्यम से सत्संग का यह उपक्रम और भी अधिक लोक प्रिय हुआ। सस्ता भी पड़ा और सरल भी रहा। ये कार्यक्रम अभी भी बड़ी सफलतापूर्वक गतिशील हो रहे हैं। युग परिवर्तन के निमित्त वाणी के माध्यम का यह प्रयोग तभी बन पड़ा, जब लाउड-स्पीकरों का प्रयोग और जीप वाहनों का उचित सुयोग बन पड़ा। इन दिनों २४ प्रचार मंडलियाँ देश के कोने-कोने में युगान्तरीय चेतना का अलख जगाने के लिए गाँव-गाँव पहुँच रही हैं और रात-दिन लाखों को युग संदेश से अवगत करके समय के साथ चलने के लिए अनुप्राणित एवं सहमत कर रही हैं। शीघ्र ही इनकी संख्या बढ़कर सौ हो जाएगी एवम् तदनुसार कार्य क्षेत्र भी बढ़ जाएगा।

अब एक सर्वेक्षा नया कदम टेप रिकार्डर एवम् वीडियो फिल्मों का अपने ही सीमित साधनों से आरम्भ कर दिया गया है। स्लाइड प्रोजेक्टर का सस्ता एवम् रोचक माध्यम कुछ समय पहले से ही चल रहा था, पर उसके लिए यह आवश्यक था कि जहाँ उसे दिखाया जाय वहाँ बिजली का प्रबन्ध होने के अतिरिक्त स्लाइड की व्याख्या करने वाला कुशल वक्ता भी होना चाहिए। टेप रिकार्डरों में पिछले दिनों मात्र संगीत ही टेप था। बहुत दिनों पहले कभी किसी ने हमारे प्रवचनों को टेप कर लिया होगा। वे भी कहीं-कहीं सुनने को मिल जाते हैं। अब उपरोक्त दोनों ही माध्यम पिछले दो साधनों के अतिरिक्त नया आकर्षण एवं नया प्रभाव लेकर सामने आये हैं।

अब वीडियो द्वारा हमारे एवं देश के प्रमुख विचारशीलों के बोलती बात करते आज के स्वरूप तथा नवयुग के संदर्भ में प्रवचन तैयार कराये गये हैं, साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही पुरातन युग के ऋषि-मुनियों द्वारा भारत भूमि को स्वर्गादपि गरीयसी तथा यहाँ के तैंतीस कोटि नागरिकों को देवोपम बनाने की कार्य पद्धति का भी सर्वांगीण प्रदर्शन है। इन्हीं पद चिन्हों पर चलते हुए हमें प्रज्ञा युग की आधार शिला रखनी है। प्रज्ञा परिजनों को अपनी क्षमता एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप क्या करना और क्या कराना है। यह सब रंगीन बोलती और गाती हुई वीडियो फिल्मों द्वारा देखने-सुनने को मिल सकेगा। इन वीडियो कैसेटों को अपने टी. वी. पर वीडियो कैसेट प्लेयर द्वारा भी दिखाया जा सकेगा। मांग के अनुसार कैसेट तैयार किये जा रहे हैं।

सिनेमा घरों में जिस प्रकार बोलती चलती फिल्में दिखाई जाती हैं, उसी आधार पर छोटे साइज की मशीनें ऐसी बनाई गयी हैं, जिन्हें चार-पांच सौ व्यक्ति तक देख सुन सकें। इसमें जितने ही महत्वपूर्ण दृश्य पुरातन काल के ऐतिहासिक स्थानों तथा तीर्थों के है। साथ ही युग चेतना का स्वरूप समझाने वाले विज्ञजनों के प्रवचन भी हैं।

सरलता एवं प्रेरणा की दृष्टि से टैप रिकार्डर पर प्रज्ञा पुराण के पांच दिवसीय कथा आयोजन सम्पन्न करने वाले टैपों एवं प्रज्ञा गीतों की सीरीज पहले ही बन चुकी थी। वह जहाँ भी पहुंची है, बड़ी आकर्षक एवं प्रेरणाप्रद मानी गयी है। अब प्रवचनों की सीरीजें विभिन्न वर्ग समुदायों के लिए बनाई जा रही हैं। बच्चों के लिए कहानियां—वृद्धों के लिए धार्मिक कथायें—युवकों-प्रौढ़ों के लिए ऐतिहासिक आदर्शवादियों की जीवन गाथायें इसी सीरीज में हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक पक्ष पर नवयुग के अनुरूप मार्ग दर्शन करने वाली टैप सीरीज भी बनी है। विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक, बालक, व्यवसायी, किसान, पुरोहित, साधु-सन्त आदि वर्गों के लिए प्रथक-प्रथक सैट हैं, जिन्हें उन-उन वर्गों को एकत्रित करके सुनाया जा सकता है। इस प्रकार हर वर्ग के लोग अपनी-अपनी स्थिति में प्रगति की दिशा में आगे बढ़ चलने—ऊंचे उठ सकने का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। हिलमिल कर रहने और हंसती-हंसाती जिंदगी जीने के सर्वोपयोगी टैप भी अभी तैयार किये गये हैं। इनके द्वारा अपने घर बैठे उच्च कोटि के विद्वानों के अपने मतलब के प्रवचन सुनने का आनन्द मिल सकता है। इतना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं परिजन अपने सम्पर्क क्षेत्र के लोगों को किसी प्राणवान सत्संग गोष्ठी का लाभ अब घर बैठे दिला सकते हैं।

टैपों में एक अच्छाई यह है कि सुनने-सुनाने का प्रयोजन पूरा होने के उपरान्त पुरानी आवाज मिटा कर उन्हीं पर नये प्रवचन, जिनकी इच्छा हो, नये सिरे से टैप करा सकते हैं। इसे मिटाने और नये करने का पारिश्रमिक तीन रुपए के लगभग आता है। हरिद्वार आना हो तो यह कार्य हाथों हाथ कराया जा सकता है अथवा डाक से भी यह कार्य हो सकता है। भेजने और वापिस मंगाने का डाक खर्च बहुत लग जाता है, इसलिए यह कार्य हाथों-हाथ कराना ही उपयोगी पड़ता है।

यह टैप ग्रामोफोन रिकार्डों का काम करते हैं। एम्प्लीफायर द्वारा इनकी आवाज बढ़ाई जा सकती है और सभासम्मेलनों में मिलने वाला आनन्द घर बैठे स्वयं भी लिया जा सकता है तथा पड़ोसियों को भी उपलब्ध कराया जा सकता है। युग संगीत के अनेकों टैप इसी प्रयोजन से अलग से रिकार्ड कराये गये हैं।

गायत्री यज्ञ कराने—या उसे कराने की विधि समझने के लिए अलग से टैप कराये गये हैं। टैप रिकार्डर मशीन, लाउड स्पीकर तथा कुछेक टैप एक बार खरीद लेने पर कोई भी व्यक्ति ऐसा वक्ता-गायक जेब में रख सकता है जो चौबीसों घण्टे अपना काम करता रहे और बदले में एक पैसा भी दक्षिणा का न मांगे। टैप रिकार्डर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बिजली का प्रबन्ध न होने पर वह बैटरी से भी चलता रह सकता है।

एक नयी योजना और आरम्भ करने का इन दिनों मन है। आठ मिलीमीटर सिनेमा फिल्मों के निर्माण का। इनके प्रोजेक्टर अब सब कहीं सरलता से मिल जाते हैं। ८ मिलीमीटर फिल्म प्रोजेक्टर, वीडियो प्लेयर (वी. सी. बी.) एवं उसके कैसिट्स यह सब भी ऐसी सामग्री हैं, जो हर प्रज्ञा पीठ थोड़ी पूँजी लगा कर अपने-अपने क्षेत्र में प्रचार अभियान का सूत्र संचालन भली प्रकार कर सकती है। सुविधा हो तो इसी कार्य के लिए एक व्यक्ति की नियुक्ति करके अपनी पहुंच के इलाके में युग चेतना का अलख जगाया जा सकता है। ऑडियो टैप दोनों ओर मिला कर एक घण्टे के भी हैं और डेढ़ घण्टे के भी। वीडियो टैप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक ही ओर रिकार्ड होते हैं एवं फिलहाल तीन घण्टे वाले कैसिट ही उपलब्ध हैं। बाजार भाव घटते-बढ़ते रहते हैं और क्वालिटी के अनुसार भी मूल्य में अन्तर पड़ता है, इनके बारे में जानकारी शां ज्ज से यथा समय प्राप्त की जा सकती है।

घटिया व्यक्तित्व के वक्ता— क का प्रत्यक्ष सामने होने पर भी उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जितना कि ऊंचे स के लिए उपरोक्त यंत्रों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त कर रहे हों, तो उन्हें सुनकर श्रोता प्रभावित होता है।

उपरोक्त निर्माणों की व्यवस्था अभी शांति कुञ्ज के छोटे स्टूडियो के अन्तर्गत ही कर ली गयी है। उसका स्वरूप एवं विस्तार भी छोटा है। अगले दिनों इसके बड़े विस्तार की आवश्यकता है। यह छोटा प्रचार तंत्र हर शाखा अपने यहाँ खेड़ा कर लें और उसमें साप्ताहिक या दैनिक जैसी भी सुविधा हो आयोजन किये जाते रहें। ऐसी अभिरुचि के लोग देखने-सुनने के लिये बुलाये जाते रह सकते हैं। इस प्रकार वाणी द्वारा प्रचार करने का एक अत्यन्त सरल, सस्ता, सुविधाजनक एवं प्रेरणाप्रद मार्ग खुल सकता है।

यदि बड़ी पूँजी उपरोक्त कार्यों में लगाने को उपलब्ध हो, तो इनके अतिरिक्त और भी कितनी ही विशेषताओं वाली मदें निर्मित की जा सकती हैं। सरकस जैसे मनोरंजन भी देख कर कइयों को जी बहलाने का अवसर मिलता है। इसी प्रकार प्रत्येक प्रक्रिया के अनुरूप अलग-अलग फिल्मों का निर्माण हो सकता है। देवताओं, ऋषियों, महामानवों की भावभरी गतिविधियों को देखने का कितनों को ही अवसर मिल सकता है। गाँधी जी ने बचपन में राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखा, वे उस आदर्शवादिता पर इतने मन्त्र मुग्ध हुये कि उसी दिन प्रतिज्ञा कर डाली कि मैं हरिश्चन्द्र जैसा सत्यवादी बनूँगा। वह व्रत उन्होने अन्जीवन निबाहा। ऐसी ही प्रेरणादायक घटनाओं से भारत का इतिहास भरा पूरा है। उन्हें देखने दिखाने का बिना पैसा खर्च किये अवसर मिलता रहे तो आशा की जा सकती है कि अपने समय के लोगों में से कितने ही अपने जीवनक्रम में अनुकरणीय परिवर्तन कर सकते हैं। जिन मद्य, मांस जैसी बुराइयों के कारण, दहेज जैसी कुरीतियों के कारण अनेकों को, अनेक प्रकार की यातनायें सहनी पड़ती हैं यदि उन्हें घटनाओं के रूप में देखने को मिले तो आशा की जा सकती है कि भावना शीलों में से अनेकों उनका परित्याग किये बिना न रहेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिनेमा का कितना प्रभाव और प्रचलन है, उसे सभी जानते हैं। कुल मिलाकर अखबारों के जितने ग्राहक हैं, उसकी तुलना में सिनेमा दर्शकों की संख्या कहीं अधिक है। कथन की अपेक्षा दृश्य सदा अधिक प्रभावशाली होते हैं। फिल्मों ने नग्नता की फैशन परस्ती की, अपराधों की जो लहर पैदा की है—नई पीढ़ी पर जो प्रभाव डाला है, उससे कोई अपरिचित नहीं है।

फिर यदि आदर्शवादिता की—जीवनोपयोगी जानकारियों की लहर पैदा करने के लिए बिना टिकट वाले छोटे सिनेमाओं का प्रचलन किया जाय, तो उसका प्रभाव आश्चर्यजनक हो सकता है। प्रगति कुञ्ज का स्टूडियो यदि लगातार फिल्में बनाता रहे और उनको इस संगठन के सदस्य अपनी थोड़ी सी फीस के बदले प्राप्त कर सकें, शाखा संगठनों का बीस पैसा नित्य वाला फण्ड उस खर्च का निपटारा करता रहे, जो घाटा पड़े उसे केन्द्र सहता रहे, तो इस योजना के अनुसार प्रायः उतने ही दर्शक नियमित रूप से मिलते रह सकते हैं, जितने कि बड़े सिनेमाओं में मंहगी टिकिट खरीद कर देखने वाले पहुंचते हैं। सिनेमाओं में दिखाई जाने वाली अश्लीलता एवं हेय घटनाओं ने यदि लोगों के दिमाग खराब किये हैं, तो कोई कारण नहीं कि उपरोक्त योजना के अनुसार उतने ही लोगों को सुधार की दिशा में अग्रसर न किया जा सके।

सरकारी प्रचार गाड़ियों में १६ एवं ८ मिलीमीटर के फिल्म दिखाये जाते हैं, वह प्रबन्ध हो सके और हर गांव में सदस्यों को दिखाने वाला सिनेमा घर बन सके, तो प्रचार की एक नई धारा प्रवाहित होगी। आठ मिलीमीटर का पर्दा कुछ छोटा होता है और अपेक्षाकृत कुछ कम आदमी उसे देख सकते हैं। आठ मिलीमीटर का प्रोजेक्टर ढाई हजार के करीब में मिल सकता है, जब कि १६ मिलीमीटर के बारह हजार रुपये के आते हैं। यदि प्रचार की दृष्टि रखनी है, मुफ्त दिखाना है और अधिक लोगों को उससे लाभान्वित करना है, तो फिर छोटे देहातों के लिए आठ मिलीमीटर ही उपयुक्त पड़ेगा। वह बिजली के स्थान पर १२ वोल्ट की बैटरी से भी चल सकता है।

यही बात टैप रिकार्डरों के बारे में है, यदि वे अपने लिए स्वयं बनवाये जाय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और बिना मुनाफे के सदस्यों को दिये जायं, तो बाजार की कीमत से आधी कीमत में सदस्यों को मिल सकेंगे। इसी प्रकार फिल्म बनाने वाले पात्र तथा व्यवस्थापक स्थाई नौकरी पर रखे जायें तो स्वयं सेवक भावना वाले भोजन वस्त्र जितने जेब खर्च पर भी आसानी से मिल सकते हैं। प्रज्ञा मिशन बहुत बड़ा है उसमें से लोक हित कार्यों के लिए हर स्तर के हर योग्यता के कार्यकर्त्ता मिलते रहे हैं। फिर कोई कारण नहीं कि इस योजना के लिए उपयुक्त कार्यकर्त्ता न मिल सकें और उन्हें प्रशिक्षित न किया जा सके। कठिनाई एक ही है प्रारम्भिक पूंजी की। प्रकाशन के लिए जिस प्रकार एक करोड़ से काम चल सकता है। स्वाध्याय उद्देश्य की पूर्ति में इतने से काम चल सकता है तो वाणी का सत्संग प्रयोजन पूरा करने के लिए भी इतनी ही पूंजी काम चलाऊ हो सकती है। अन्धविश्वासी यदि अपने समुदाय में रहे होते तो कोई भी बाबा इतना पैसा मन्दिर भण्डारा आदि के नाम पर सहज ही जुटाने और खर्च करा डालने में सफल हो सकता था। पर कठिनाई एक ही है कि विचार शीलता जहां आती है वहां श्रद्धा समाप्त हो जाती है। जिनके पास नहीं है वे तो भी ऐसे कामों में अपनी हैसियत से अधिक खर्च कर सकते हैं। पर जो जितना बड़ा विचारशील बनता है वह उतना ही बड़ा बकवादी किन्तु उदारता की दृष्टि से शून्य होता जाता है। उसके पास पैसा होते हुए भी देने के नाम पर अनुदारता ही प्रदर्शित करता है। यही कारण है कि लेखनी और वाणी से सम्बन्धित दोनों योजनाओं के लिए एक-एक करोड़ जैसी राशि के लिए मिशन को मन मसोस कर बैठना पड़ता है।

जो हो, अपने स्वल्प साधनों से दोनों ही योजनायें पहले की अपेक्षा नये कार्यक्रम और नये उत्साह के साथ आरम्भ की गई हैं। अपने पास जो स्वल्प साधन थे, वे झोंक दिए गए हैं और आशा की गई है कि भावनाशील लोग कहीं न कहीं से निकलेंगे और इन स्वाध्याय तथा सत्संग की सृजनात्मक योजनाओं को कार्यान्वित करने में हाथ बंटाएंगे।

कम्पोज २२६ युगान्तर चेतना प्रेस, शांति कुञ्ज हरिद्वार। मूल्य ४ पैसा

Free Read, Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org